JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

फरीदाबाद के निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य/प्रधानचार्या की नेतृत्व शैली और शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

शोधकर्ता- मधु मार्गदर्शक - प्रो ०(डॉ) मंजु शर्मा

(शोध विद्यार्थी, लिंग्याज विद्यापीठ, नचौली, फरीदाबाद, हरियाणा)

सारांश

इस वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य फरीदाबाद जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के नेतृत्व वाली और शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संस्कृति पर प्रभाव का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु 20 सरकारी एवं 20 निजी विद्यालयों का चयन किया गया है। शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि हेतु उमेंद्र सिंह एवं निधि मदान और प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली हेतु एस तलसेरा तथा शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक जलवायु के लिए मानकीकृत जलवायु मापनी का निर्माण किया गया है। आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु मध्यमान मानक विचलन की अनुपात का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण उपरांत पाया गया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली और शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों के कार्य संतुष्टि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

मुख्य शब्द- प्रधानाचार्य, विद्यालय, नेतृत्व शैली,संगठनात्मक वातावरण, कार्य संतुष्टि

परिचय

राष्ट्रव्यापी नवनिर्माण में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। एक शिक्षक राष्ट्र के निर्माण में सबसे अहम कड़ी होता है। शिक्षक ही देश को एक सभ्य नागरिक प्रदान करता है। सभ्य राष्ट्र के निर्माण के कार्य को करने के लिए एक शिक्षक का अपनी नौकरी से संतुष्ट होना बहुत जरूरी है। विद्यालयों में वर्ग प्रर्दशन और उत्पादकता बस संतुष्टि का एक कारक हैं। शिक्षक को शिक्षण में तभी रुचि होती हैं जब वह अपनी नौकरी से संतुष्ट होता है। अन्य देशों की तरह भारत में भी शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता में सुधार करने की कोशिश की जा रही हैं। इसके लिए बहुत सी योजनाओं को लागू किया गया है। कार्य की संतुष्टि में निजी व सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के लिए अलग- अलग कारण होते है कि निजी विद्यालयों के शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि अलग तरह की पाई गई है। और सरकारी विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि के अलग कारण है। चाहे निजी व सरकारी विद्यालय के शिक्षक हो उनका नौकरी की संतुष्टि का होना बहुत आवश्यक हैं। तभी वह अपने कौशलौ का सही प्रकार से प्रयोग करते है। शिक्षक समाज का निर्माता होता है। शिक्षा की पूरी प्रक्रिया शिक्षक के चारों ओर घूमती है, शिक्षक के बिना विद्यालय एक स्मृति हीन शरीर हैं। वह छात्रों के बौद्धिक व आध्यात्मिक पिता हैं वे छात्रों को अंधकार से प्रकाश और अज्ञान से ज्ञान की तरफ ले जाते हैं। वह छात्रों का बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। एक प्रधानाचार्य की अच्छी नेतृत्व शैली का होना भी बहुत ज्यादा आवश्यक है।

विद्यालय की संस्था

विद्यालय का संगठनात्मक पक्ष मुख्यत: उन व्यवस्थाओं से संबंधित हैं। जो निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता देती है। विद्यालय संगठन के अन्तर्गत भौतिक तथा मानवीय तत्वों को साध्य की प्राप्ति के लिए उपलब्ध एवं सुव्यवस्थित किया जाता हैं।

आर्थर मोलमैन के अनुसार-शिक्षा के कार्य की सम्पन्नता के लिए एक निश्चित संगठन चाहिए एच . जे. ऑटो के अनुसार,"सिद्धांत विद्यालय का संगठन शिक्षा-सिद्धांत की प्रशासकीय अभिव्यक्ति है। यह वह संरचना हैं जिसे अध्यापक, छात्र, निरीक्षक एवं अन्य व्यक्ति विद्यालय की प्रक्रियाओं के लिए कार्य करते हैं। विद्यालय व्यवस्था शिक्षा का वातावरण प्रस्तुत करता है।

प्रधानाचार्य / प्रधानाचार्या के नेतृत्व शैली का शिक्षक की नौकरी संतुष्टि पर प्रभाव

शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का विकास होता है। शिक्षा संस्कृति के हस्तांतरण, संरक्षण एवं संवर्धन का प्रमुख साधन है।किसी भी राष्ट्र की शिक्षा वहां की संस्कृति की परिचालक होती है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी शिक्षक हैं। सही अर्थो में शिक्षक ही राष्ट्र का निर्माता होता हैं। वह देश की संस्कृति एवं परंपराओं के ज्ञान रुपी दीपक को निरन्तर प्रकाशित करता रहता है। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ राधा कृष्णन सर्वपल्ली के अनुसार- "शिक्षक राष्ट्र के कल्याण व भविष्य की धरोहर के रक्षक होते हैं।" शिक्षक विद्यालय अधिगम प्रक्रिया का हृदय कहलाता है। इस शिक्षक को चरित्रवान एवं योग्यहोना चाहिए क्योंकि वह एक देखी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है तथा देश की संस्कृति का निर्माता भी होता हैं।

सभी शिक्षकों की संतुष्टि अलग-अलग होती है। प्रधानाचार्या/प्रधानाचार्य के नेतृत्व का भी शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि पर प्रभाव पड़ता है।मनोबल बढ़ाना चाहिए और उनका यह सहयोग एक शिक्षक के लिए बहुत आवश्यक होता है। स्कूल संस्था व शिक्षक के विकास व संतुष्टि के लिए एक प्रधानाचार्य को उचित नेतृत्व करने वाला होना चाहिए।

विद्यालय का वातावरण

विद्यालय के वातावरण का तात्पर्य उन संबंधों के समूह से हैं जो एक शैक्षिक समुदाय के संरचनात्मक, व्यक्तिगत और कार्यात्मक कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं। जो स्कूलो को विशिष्टता प्रदान करते हैं। शिक्षक की नौकरी संतुष्टि में स्कूल का वातावरण एक महत्वपूर्ण कारक है। विद्यालयों का वातावरण से शिक्षक और प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या की नौकरी की संतुष्टि और व्यवसायिक एक मजबूत पाया जाता है। प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या ही है जो शिक्षक और संस्था को जोड़ने व सही रूप से चलाने के लिए एक उचित वातावरण का निर्माण करता है। अगर स्कूल का वातावरण स्वस्थ होता है तो शिक्षक अपने आप वहा ँ संतुष्टि का आभास हो जाता है। एक स्वस्थ संस्था के लिए शिक्षक व प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या के बीच मधुर संबंध, सहयोग का होना बहुत महत्वपूर्ण होता है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली और शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों के कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन से संबंध रखता है।

शोधकर्ता ने समस्या चयन के लिए चिंतन किया विचार-विमर्श किया पुस्तकालय में रखिए शोध ग्रंथ एवं संदर्भ पुस्तकों एवं समाचार पत्रों को पढ़ने के बाद निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालयों में प्रधानाचार्य के नेतृत्व वाली और शैक्षणिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित करता है।

कार्य संतुष्टि का क्षेत्र बहुत व्यापक है इसमें हर स्तर पर दोबारा खोज कर उसमें जो कमियां रह गई हैं उन के दूर करने की कोशिश कर सकते हैं नौकरी की संतुष्टि में अभी कई ऐसी समस्याएं हैं जिनका हल हमें अब तक प्राप्त नहीं हुए हैं उन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए इस क्षेत्र में काम करने की आवश्यकता है निजी व सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच वेतन कार्य भार पर्यावरण संगठन में बहुत अंतर देखा जाता है आज बहुत सारे शिक्षक चाहे वह सरकारी व निजी स्कूलों के शिक्षक है यह अपनी नौकरी से कहीं ना कहीं और संतुष्ट दिखाई देते हैं इस इसीलिए इन समस्याओं की खोज कर उनका हल करना है जिसके साथ ही निजी स्कूल अध्यापक का अपनी संस्थाओं जिसमें वह कार्य करते हैं उसको लेकर भी बहुत से निजी शिक्षकों को असंतोष होते देखा गया है। कभी-कभी संस्था का व्यवहार अपने कर्मचारियों के प्रति सहयोगात्मक व भावात्मक नहीं होता है । संपूर्ण दृष्टिकोण से यह एक शैक्षिक समस्या है जिसका अध्ययन करना वर्तमान समय को देखते हुए अति आवश्यक है और यह कारण रहा कि शोधकर्ता ने इस समस्या पर अनुसंधान करने के लिए करने का निश्चय किया है इस समस्या पर संभव तब तक अभी तक अन्य कोई शोध कार्य संपन्न नहीं हुआ है अतः यह एक नवीन और मौलिक समस्या होगी जिसके समाधान का प्रयास प्रस्तुत शोध में किया गया है।

समस्या कथन

"फरीदाबाद के निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली और शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन"।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालय के संस्थानों के संगठनात्मक शिक्षकों की कार्य संस्कृति पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या की नेतृत्व शैली का शैक्षणिक संस्थानों के वातावरण पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शैक्षणिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता ।
2..सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या नेतृत्व की शैली का शैक्षिक संस्थानों के वातावरण के मध्य कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता।

शोध समस्या का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध कार्य फरीदाबाद जिले में किया गया है।
2. इसमें माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय निजी विद्यालयों को लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों व निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्या/ प्रधानाचार्य व शिक्षकों पर किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु 40 प्रधानाचार्य वह 160 शिक्षकों को सम्मिलित गया है ।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि:-

शोधकर्ता ने परिकल्पना एवं उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण:-

1.शिक्षकों के कार्य संतुष्टि मापन हेतु ओमेंद्र सिंह व निधि मदान के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

2. प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली के लिए एस तलसेरा द्वारा निर्मित प्रिंसिपल लीडरशिप के परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

3. शैक्षणिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण के लिए एक मानकीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी:-

सांख्यिकी के रूप में इस अनुसंधान में मध्यमान मापन

विचलन टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है

निजी एंव सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर प्रभाव की तुलना

चर	निजी माध्यमिक विद्यालय		सरकारी माध्यमिक विद्यालय	
	शैक्षिक संस्थानों का संगठनात्मक वातावरण	शिक्षकों की कार्य संतुष्टि	शैक्षिक संस्थानों का संगठनात्मक वातावरण	शिक्षकों की कार्य संतुष्टि
न्यादर्श	80	80	80	80
माध्य	197.3	104	212.5	106.8
प्रमाणिक विचलन	33.07	5.04	23.03	6.22
एनोवा (Analysis of Variance)	622.61			
सार्थकता स्तर	0.01 स्तर पर सार्थक			

परिणामों का प्रस्तुतीकरण, वर्गीकरण और अर्थापन

1. निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शैक्षणिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

तालिका नंबर 1

निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शैक्षणिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन					
चर		न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी- मूल्य
सरकारी माध्यमिक विद्यालय	शैक्षणिक संस्थानों का संगठनात्मक वातावरण	80	197.3	33.7	
	शिक्षकों की कार्य संतुष्टि		104	5.04	
निजी माध्यमिक विद्यालय	शैक्षणिक संस्थानों का संगठनात्मक वातावरण	80	212.5	23.03	
	शिक्षकों की कार्य संतुष्टि		106.8	6.22	622.61

सार्थकता स्तर-0.01 एवं 0.05 स्तर पर सार्थक हैं

विश्लेषण:-

निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का तुलना का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गय। जिसमें निजी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का मध्यमान 197.3और प्रमाणिक विचलन 33.7 आय। तथा शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान 104 और प्रमाणिक विचलन 5.04 आया ।सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का मध्यमान 212.5और प्रमाणिक विचलन 23.03 तथा शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान 106.8 और प्रमाणिक विचलन 6. 22 आया। निजी एवं माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता परिकल्पना की सार्थकता जांचने के लिए मूल्य ज्ञात किया गया।एफ मूल्य का मान 622. 61 प्राप्त हुआ परीगणित का मान 0.05 एवं 0.01 तक के लिए आवश्यक सारणी मान से अधिक है। अतः शोधार्थी द्वारा पूर्व में निर्मित परिकल्पना निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शैक्षिक संस्थानों के वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता। इसीलिए इसे अस्वीकार कर किया जाता है।

निष्कर्ष:-

इसका निष्कर्ष यह निकलता है। कि निजी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों का वातावरण उच्च स्तर का होता है। जिसका प्रभाव शिक्षकों के शिक्षण व्यवस्था पर भी पड़ता है । निजी विद्यालयों में आधुनिक शिक्षण की तकनीकी नई तकनीकी उपलब्ध होती है। छात्रों की गुणवत्ता युक्त शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता है। जिसका असर शिक्षकों पर पड़ता है। यद्यपि वेतनमान को लेकर भी निजी विद्यालय के शिक्षक अधिक संतुष्ट नहीं दिखाई देते जबकि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शैक्षिक संस्थानों का वातावरण निजी विद्यालय के तुलना में उचित स्तर का नहीं होता। जिसका प्रभाव शिक्षकों के साथ-साथ शिक्षण व्यवस्था पर भी पड़ता है। सरकारी विद्यालय में पुरानी व्यवस्था उपलब्ध होती । जिससे छात्रों की गुणवत्ता युक्त शिक्षा नहीं हो पाती है। शिक्षक पद के कारण कार्य में अधिक रूचि नहीं लेते है। निजी विद्यालयों की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों में छात्रों की संख्या कम होती है।

निजी एंव सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या की नेतृत्व शैली का शैक्षिक संस्थानों के वातावरण की तुलना

चर	निजी माध्यमिक विद्यालय		सरकारी माध्यमिक विद्यालय	
	प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या की नेतृत्व शैली	शैक्षिक संस्थानों का वातावरण	प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या की नेतृत्व शैली	शैक्षिक संस्थानों का वातावरण
न्यादर्श	20	80	20	80
माध्य	106.8	197.3	111	212.5
प्रमाणिक विचलन	7.29	33.07	7.4	23.03
एनोवा (Analysis of Variance)	154.21			
सार्थकता स्तर	0.01 स्तर पर सार्थक			

निजी एंव सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या की नेतृत्व शैली का शैक्षिक संस्थानों के वातावरण पर प्रभाव की तुलना का ग्राफीय निरूपण

2. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या नेतृत्व की शैली का शैक्षिक संस्थानों के वातावरण के मध्य कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता।

निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली का शैक्षिक संस्थानों के वातावरण पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन					
चर		न्यार्दश	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी -मूल्य
सरकारी माध्यमिक विद्यालय	प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली	20	106.8	7.29	
	शैक्षिक संस्थानों का वातावरण	80	197.3	33.7	154.21
निजी माध्यमिक विद्यालय	प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली	20	111	7.4	
	शैक्षिक संस्थानों का वातावरण	80	212.5	23.03	

सार्थकता स्तर- 0.01एवं 0.05 पर सार्थक स्तर हैं।

विश्लेषण:-

निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली का शैक्षिक संस्थानों के वातावरण पर प्रभाव की तुलना का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया ।िसमें निजी माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली का मध्यमान 106.8 और प्रमाणिक विचलन 7.29 आया है ।संस्थानों के वातावरण का मध्यमान 193.7और प्रमाणिक विचलन 33.7 आया है। सरकारी माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली का मान 111 और प्रमाणिक विचलन 7.4 आया तथा शैक्षिक संस्थानों के प्रभाव का अध्ययन 212. 5 और प्रमाण 23.03 एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य शैक्षिक संस्थानों के वातावरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता इसका अध्ययन करने के लिए परिकल्पना की जांच करने के लिए एफ मूल्य 154.21ज्ञात किया गया परीगणित एफ मुल्य का मान 0.0 5 स्तर एवं 0.01के लिए आवश्यक सारणी मान से अधिक है इसीलिए इसेअस्वीकार किया जाता है ।

निष्कर्ष:-

निजी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों का वातावरण उच्च स्तर का होता है। जिसका प्रभाव शिक्षकों के साथ-साथ शिक्षण व्यवस्था पर भी पड़ता है निजी विद्यालयों में आधुनिक शिक्षा की नई तकनीक की उपलब्धि होती है जिससे छात्रों की गुणवत्ता युक्त शिक्षा पर बल दिया जाता है इसका असर शिक्षकों पर भी पड़ता है । माना कि वेतनमान को लेकर निजी विद्यालय के शिक्षक अधिक संतुष्ट नहीं दिखाई देते हैं कई बार वह अपने संघात्मक वातावरण से भी संतुष्ट नहीं दिखाई देते जबकि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों का वातावरण निजी विद्यालयों की तुलना में उत्तर का नहीं होता है। जिसका प्रभाव पड़ता है सरकारी विद्यालय में पुरानी व्यवस्था उपलब्ध होती हैं छात्रों की गुणवत्ता युक्त शिक्षा नहीं हो पाती है एक पद के कारण कार्य में अधिक रूचि नहीं लेते हैं।
इसीलिए सरकारी स्कूलों में छात्रों की संख्या कम होती है।

संदर्भ

- फील्डर, FE(1967) ए थ्योरी ऑफ लिडरशिप
- इफेक्इटविटी, न्यूयॉर्क:मैकग्रा हिल |
- इंगरसोल (2002) शिक्षात्मक नेतृत्व 60(8) 30-33
- माईखेलिनो ओर जेम्वलस (2006) ने एक पत्र प्रकाशित किया तुलनात्मक पत्रिका शिक्षकों की संतुष्टि और असंतोष के स्त्रोतों पर शिक्षा VOL. 35 NO. 2 PP 229-471.
- Spector P.E (1997) :Job satisfaction Application assessment ,causes and consequences theory oaks CA. SAGE.
- M.E.D. Book शैक्षिक प्रबंधन और प्रशासन में पाठ 10 नेतृत्व में शैली के प्रकार.
- इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ प्योर एडं एलाइड मैथमेटिक्स वाल्यूम 119 नम्बर 72018,2654-2655 ISSH:1311-8080.
- मेहता एस (2012) शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि आईयूपी जर्नल ऑफ ऑगनाइजेशन व्यवहार, 12(2) 581.
- सूकी, एनएम, (2011) नौकरी की संतुष्टि और संगठनात्मक प्रतिबद्धता |मनोविज्ञान अनुसंधान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका 6(5) 1-15 .
- जिल्ली, एएस और जहूर (2012) पुरुष और महिला शिक्षक इडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एड एजुकेशन.
- गुप्ता व साहू - इंडियन जर्नल ऑफ द साइकोमेट्रि एड education वाल्यूम-40, नम्बर (1, और 2) पी पी-7.
- देवी रीना (2003) ए स्टडी ऑन जॉब सैटिस्फैक्शन प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच समायोजन |अप्रकाशित एम.इ.डी विस्थापन विभाग शिक्षा जम्मू कश्मीर, विश्वविद्यालय |
- नसरीन कुसर BGSBU राजौरी, जम्मू कश्मीर विश्वविद्यालय|
- बुदंरा ए 1977|आत्म प्रभावकारिता-व्यवहार के एकीकृत सिद्धांत की ओर|मनोविज्ञान समीक्षा 84,191-215

- घोष एसएम (2015) सरकारी और निजी विद्यालय के शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि रांची | भारतीय मनोविज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल 2,(2)88-93|
- जयशंकर (1989) ए स्टडिज ऑफ टीचर्स वैल्यू एंड उनके शिक्षण के संबंध में नौकरी से संतुष्टि | अप्रकाशित डॉक्टर धीसिस, शिक्षा विभाग ,आगरा विश्वविद्यालय आगरा |
- नागर के (2012 अप्रैल) संगठात्मक शिक्षकों के बीच प्रतिबद्धता और नौकरी संतुष्टि बर्न आउट| विकल्प 37.2,43-60 |
- माला, जय(2004)ए स्टडी ऑफ जॉब सैटिस्फैक्शन, मैनिफेस्ट चिंता के बीच शिक्षक UNPUBLISHED MA (शिक्षा) शोध प्रबंध, जम्मू विश्वविद्यालय
- भट्टनागर आर. पी(2010) शैक्षिक प्रशासन, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मे मेरठ पृष्ठ संख्या-138|
- डॉक्टर डी एस श्रीवास्त (2008,2009) संख्याकी एक मापन,अग्रवाल पब्लिकेशन
- बीएस राजसपा(2010) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व
- लोकेश कॉल(2010) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली
- डॉ मीनाक्षी भटनागर और डॉ आर पी भटनागर(2010) शिक्षा अनुसंधान, लॉयल बुक डिपो मेरठ, द्वितीय संस्करण
- सिन्हा एस. सी. शैक्षिक अनुसंधान(1969)विकास पब्लिकेशन हाउस प्राइवेट लिमिटेड
- गुप्ता एसपी डॉट गुप्ता अलका 2007 सांख्याकीय की विधियों,इलाहाबाद शाखा पुस्तक भवन
- शोध पद्धतियां और विधियां एम ए समाजशास्त्र ,गुल्ली बाबा पब्लिकेशन हाउस प्राइवेट लिमिटेड
- आर एस शर्मा(2011) शिक्षा के अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया ,आर लाल बुक डिपो
- सुखिया मल्होत्रा तथा मल्होत्रा आरएन शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व
- सक्सेना एंड 1966 फंडामेंटल और एजुकेशनल रिसर्च माइथोलॉजी सर्वे पब्लिकेशन
- डॉक्टर दीपक चावला एंड डॉक्टर नीना 2016 रिसर्च मेथाडोलॉजी कॉन्सेप्ट्स एंड केसेस, विकास पब्लिकेशन हाउस प्राइवेट लिमिटेड
- शर्मा आ रहे(1986)मैथोलॉजर ऑफ एजुकेशन रिसर्च दिल्ली, सुरजीत पब्लिकेशन

www.javatpoint

- w.w.wwjpam.ed
- samaj karyshiksha. come
- https:web:archive.org/web/20161104025323
- www.investopedia/https//statrek.com/survey-reseach/ sampling methodology aspx:tutorial=ap
- Azirib job satisfaction a litearture and review. Mangement research and practice vol. 3 issue 4(2011) pp. 77.88